ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-3* Issue-10* January- 2019
Anthology : The Research

कानपुर नगर के कक्षा 11वीं के विद्यार्थियों का पर्यावरण जागरूकता का एक अध्ययन

तनवीर हबीबा
प्रवक्ता,
बी0एड0 संकाय,
शिववती शिवनन्दन शुक्ला महाविद्यालय,
कानपुर देहात

सारांश

शिक्षा मनुष्य का सर्वांगीण विकास करती है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि यहां जीवित व्यक्ति का वातावरण के साथ समायोजन है। शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति अपने को वातावरण के प्रति समायोजित करता है। आज अपने लाभ के लिये गुमराह इंसान प्रकृति के तत्वों के साथ छेड़खानी कर रहा है। ऐसे में पर्यावरण शिक्षा की सार्थकता सामने आती है। क्योंकि सही ऐसी शिक्षा है जो मनुष्य को प्रकृति के साथ जीने का तरीका सिखाती है। फलतः आज पूरे विश्व के पाठ्यक्रमों में पर्यावरणीय शिक्षा एक महत्वपूर्ण विषय बनकर उभर रही है। पर्यावरण शिक्षा आवश्यक है अन्य विषय अपनी जगह है लेकिन उन्होंने मनुष्य के ज्ञान को खांचों में बांटने का ही काम किया है। प्रकृति और मानव के साथ सही तालमेल सिखाने का काम यदि वे विषय करते तो शायद पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता ही नहीं होती है। सबसे ऊँचा शस्त्र है मधुर सम्बन्धों का शस्त्र है यह पर्यावरण शिक्षा मधुर सम्बन्धों के इसी शास्त्र की रचना करती है। अतः आज के जगत में यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

मुख्य शब्द : पर्यावरणीय जागरूकता, विकासशील देश।

प्रस्तावना

पर्यावरणीय जागरूकता अब एक विश्वव्यापी विषय बन गया है।

पर्यावरणीय जागरूकता से तात्पर्य संरक्षण एवं प्रबन्ध करने के प्रति लोगों को सचेत करना जिससे पर्यावरण को कोई हानि न पहुंचे। आज सभी लोगों में पर्यावरणीय जागरूकता उत्पन्न करना आवश्यकता बन गयी है।

भारत एक विकासशील देश है और विकास कार्यों की दिशा में उद्योग धन्धों की स्थापना एक महत्पूर्ण कदम है किसी भी देश की प्रगति के लिये आवश्यक है कि उसका प्रकृति के साथ संतुलन बना रहे। यदि पेड़ काटे जाये तो यह आवश्यक है कि उससे ज्यादा पेड़ लगाये जाये।

पर्यावरण जागरूकता के विकास में विद्यालय की भूमिका

विद्यालय में स्वच्छ वातावरण का निर्माण करके पर्यावरण के विकास में सहयोग प्रदान किया जा सकता है। पर्यावरण के प्रचार प्रसार हेतु अनेक ललित कलाओं जैसे नृत्य, नाटक, गायन पोस्टर प्रतियोगिता एवं वाद विवाद वृक्षारोपण कार्यक्रम को समय समय पर आयोजित करके विद्यालय पर्यावरण के विकास में अपना सहयोग प्रदान करता है। पर्यावरण को प्रदूषित करने वाले साधनों को विद्यालय से दूर रखकर स्वस्थ पर्यावरण का निर्माण करता है। विद्यालय ही वह सस्था है जिसके माध्यम से समाज में आने वाली भावी पीढ़ी में पर्यावरणीय समस्याओं का सामना करने की सामर्थ्य उत्पन्न की जाती है।

अध्ययन की आवश्यकता

पर्यावरण आज वैश्विक धारणा है। पर्यावरणीय शिक्षा ज्ञान हेतु एक पहल या पहुंच है। यह ऐसी विचारधार के सृजन हेतु प्रयत्न करती है। जिसके द्वारा पूर्वधारणाओं पर विजय हासिल कर सकें। यह सामान्य से जटिल की और अनुभवों के कार्यान्वयन के क्रम में मदद करती हैं। पर्यावरणीय शिक्षा का सिद्धान्त यह है कि यह प्रदूषण के खतरों और

पर्यावरण की समझ के प्रति शिष्यों की शैक्षिक समस्या का निर्माण करती है। पर्यावरणीय शिक्षा सामाजिक रूप से उपयुक्त है क्योंकि यह बताती है कि कैसे अनियंत्रित और अनियोजित विकास पानी हवा और मिट्टी को प्रदूषित करता है जिससे हमें अपने तत्व और अस्तित्व को चुनौती दी जा रही है। इसलिये पर्यावरणीय शिक्षा का तात्पर्य ऐसी शैक्षिक प्रक्रिया जिसके द्वारा मनुष्य अपना सम्बन्ध घर अपनी और प्रकृति प्रदत्त पर्यावरणों से विभाजन रखता है और जनसंख्या के प्रदुषण संसाधन, कमी, संरक्षण, परिवहन, प्रौद्योगिकी, ऊर्जा, नगरीय एवं ग्रामीण योजना सम्पूर्ण जैवीय विश्व से जोड़ती हैं। दूसरी ओर पर्यावरणीय जागरूकता का तात्पर्य सम्पूर्ण पर्यावरण और उससे सम्बन्धित समस्याओं के प्रति जागरूकता एवं समझदारी को प्राप्त के लिए सामाजिक समूहों और व्यक्ति लोगों की मदद करना है।

आज भारत में पर्यावरण संरक्षण के लिए मुख्य बाधा यह है कि यहां वैज्ञानिक ज्ञान की एवं कार्य करने की इच्छा शक्ति की कमी है इस स्थिति में समाज को पर्यावरण के महत्व विश्वस्थ किया जाये और हमें इस तथ्य को समझना पड़ेगा कि जिस तरह हम जीवन जी रहे हैं वहीं हमारे भविष्य को निश्चित करेगा। चूँकि समस्या लोगों की लोगों के लिए और लोगों के द्वारा ही है एक उत्तम समझदारी और लोगों का समर्थन प्रदूषण विरोधी उपायों को लम्बे समय तक चलाते रहेंगे।

समस्या कथन

''कानपुर नगर के कक्षा 11वीं के विद्यार्थियों का पर्यावरण जागरूकता का एक अध्ययन''।

अध्ययन के उद्देश्य

1. कानपुर नगर के माध्यमिक स्तर के कक्षा 11वीं के विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन करना।
2. कानपुर नगर के कक्षा 11वीं स्तर के विभिन्न वर्गों विज्ञान, कला एवं वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों में पर्यावरण चेतना ज्ञात करना।
3. कानपुर नगर के विद्यार्थियों में पर्यावरण के विभिन्न घटकों की जानकारी ज्ञात करना।
4. कानपुर नगर में माध्यमिक स्तर के लड़के एवं लड़कियों में पर्यावरण प्रदूषण के प्रकार के विषय में जानकारी ज्ञात करना।
5. कानपुर नगर के माध्यमिक स्तर के लड़के एवं लड़कियों में पर्यावरण प्रदूषण से होने वाली समस्याओं की जानकारी ज्ञात करना।
6. कानपुर नगर के विद्यार्थियों में पर्यावरण प्रदूषण से बचाव के उपाय की जानकारी ज्ञात करना।

अध्ययन की सीमाएँ

शोधकर्त्री के पास समय व धन की कमी के कारण अपने अध्ययन कानपुर नगर तक सीमित किया है। कानपुर नगर में पढ़ने वाले कक्षा 11 से सम्बन्धित बहुत कालेज हैं लेकिन सुविधानुसार कानपुर नगर के सात कालेजों को चुना गया। इसमें कक्षा 11 के अन्तर्गत अध्ययन करने वाले छात्र एवं छात्राओं को न्यादर्श के रूप में चुना गया है।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

1. पर्यावरण जागरूकता पर बालक एवं बालिकाओं के बीच कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. पर्यावरण जागरूकता पर विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों एवं कला वर्ग के विद्यार्थियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. पर्यावरण जागरूकता पर विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों तथा वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. पर्यावरण जागरूकता पर कला वर्ग के विद्यार्थियों तथा वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
5. उच्च पर्यावरण जागरूकता स्तर एवं सामान्य पर्यावरण जागरूकता स्तर के बालक एवं बालिकाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
6. उच्च पर्यावरण जागरूकता स्तर पर सामान्य पर्यावरण जागरूकता स्तर पर विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
7. उच्च पर्यावरण जागरूकता स्तर एवं सामान्य पर्यावरण जागरूकता स्तर पर कला वर्ग के विद्यार्थियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
8. उच्च पर्यावरण जागरूकता स्तर एवं सामान्य पर्यावरण जागरूकता स्तर पर वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।

अनुसंधान विधि

सर्वेक्षण विधि

सामाजिक अनुसंधान की प्रणालियों में सर्वेक्षण विधि का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है सर्वेक्षण से तात्पर्य ऐसी अनुसंधान प्रणाली से है जिसमें अनुसंधानकर्ता घटनास्थल पर जाकर किसी विशेष घटना का वैज्ञानिक निरीक्षण करता है तथा उसके सम्बन्ध में खोज करता है। सीमित समय का उपयोग करते हुए किसी जनसंख्या पर निश्चित समय में शोध के लिये सर्वेक्षण विधि ही सर्वोपरि मानी गयी है।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन के लिये कानपुर शहर के विभिन्न हिन्दी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में से सात विद्यालयों को चुना गया। विद्यालयों का चयन अपनी सुविधा के आधार पर किया गया। अध्ययन हेतु संयोगिक रूप से 375 विद्यार्थियों को चयन किया

गया। जिसमें छात्र व छात्रायें दोनों ही सम्मिलित थे। कक्षा 11 की कक्षा में उस समय अवसरानुकूल उपस्थित विद्यार्थियों को अध्ययन हेतु चयनित किया गया तथा इसमें हमने यादृच्छिकी न्यादर्श विधि का प्रयोग किया है।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

पर्यावरण जागरूकता योग्यता को मापने के लिये शोधकर्ती ने डॉ0 प्रवीन कमार झा'' द्वारा निर्मित ''पर्यावरण जागरूकता योग्यता मापनी'' (Environment Awareness Ability Measure) का प्रयोग किया है। इस मापनी में छात्र एवं छात्राओं का पर्यावरण प्रदूषण एवं इसके संरक्षण के लिए किस सीमा तक एवं किस स्तर तक जागरूकता है मापने का प्रयास किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण

प्रस्तुत अध्ययन में आंकड़ों का विश्लेषण करने के लिए ''मध्यमान (Mean) मानक विचलन (S.D.) मानक त्रुटि मध्यमान, (STd Errorment) टी परीक्षण (t Test) का प्रयोग किया गया।''

निष्कर्ष

आज पूरा विश्व यदि किसी एक समस्या को लेकर चिन्तित है तो वह है पर्यावरण की समस्या तथा इस समस्या का समाधान केवल लोगों को पर्यावरण की सही प्रकार से जानकारी देना तथा उनकी पर्यावरण के प्रति जागरूकता से हो सकता है। इस अध्ययन में पर्यावरण के प्रति जागरूकता स्तर को जानने का प्रयाग किया गया है।

1. कुछ बालक एवं बालिकाओं में पर्यावरण के प्रति जागरूकता में अन्तर हैं। अतः दोनों में पर्यावरण जागरूकता के प्रति दृष्टिकोण में अन्तर है।
2. पर्यावरण जागरूकता के प्रति विज्ञान व कला वर्ग के विद्यार्थियों में सार्थक अन्तर है क्योंकि विज्ञान वर्ग के विद्यार्थी कला वर्ग के विद्यार्थियों की तुलना में वातावरण के प्रति अधिक जागरूक है।
3. पर्यावरण जागरूकता पर वाणिज्य वर्ग तथा विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में सार्थक अन्तर पाया गया है क्योंकि विज्ञान वर्ग के विद्यार्थी अन्य वर्गों के विद्यार्थियों की तुलना में पर्यावरण के प्रति अधिक जागरूक है।
4. पर्यावरण जागरूकता पर 0.01 स्तर पर कला व वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों में कोई अन्तर नहीं है लेकिन 0.05 स्तर पर कला वर्ग के लड़के एवं लड़कियों तथा वाणिज्य वर्ग के लड़के एवं लड़कियों में पर्यावरण जागरूकता के ज्ञान में सार्थक अन्तर है।
5. उच्च पर्यावरण जागरूकता के स्तर तथा सामान्य पर्यावरण जागरूकता के स्तर पर अन्तर पाया जाता है। क्योंकि इसमें सब विद्यार्थी शहर के हैं अतः उनकी पर्यावरण जागरूकता का स्तर उच्च पाया गया है तथा सामान्य स्तर के विद्यार्थी कम हैं तथा निम्न स्तर के कोई भी विद्यार्थी नहीं है।
6. उच्च पर्यावरण जागरूकता स्तर तथा सामान्य पर्यावरण जागरूकता स्तर में विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में अन्तर पाया गया है। क्योंकि विज्ञान वर्ग के बालक पर्यावरण के प्रति लड़कियों की तुलना में अधिक जागरूक होते हैं।
7. उच्च पर्यावरण जागरूकता के स्तर तथा सामान्य पर्यावरण जागरूकता के स्तर में 0.05 तथा 0.01 स्तर पर कला वर्ग के लड़के व लड़कियों में सार्थक अन्तर है। फिर भी कला वर्ग के विद्यार्थियों में उच्च पर्यावरण जागरूकता का स्तर सबसे अधिक पाया गया है।
8. ये परिकल्पना दोनों स्तरों से (0.05 स्तर तथा 0. 01 स्तर) पर अस्वीकृत होती है। अतः इस प्रकार उच्च पर्यावरण जागरूकता स्तर एवं सामान्य पर्यावरण जागरूकता स्तर में वाणिज्य वर्ग के बालक एवं बालिकाओं में अन्तर है।

प्रस्तुत अध्ययन की अपनी सीमायें हैं किन्तु परिणामों का अपना महत्व है। आज के युग में बढ़ते हुए प्रदूषण के प्रति किशोर मस्तिष्क कितना जागरूक है यह जानना ही शोधकर्त्री के अध्ययन का प्रमुख अध्यापक बच्चों को सही दिशा दे तो प्रारम्भ से ही उनमें प्रकृति के साहचर्य के संस्कार पैदा होगें और ऐसे बालक आगे जाकर नदियों को प्रदूषित नहीं करेंगे, न वनों की कटाई और न ही जनसंख्या की वृद्धि में सहायक होंगे। पर्यावरण शिक्षा का दर्शन पक्ष हमें शुरू से ही सही दिशा में सोचने व बढ़ने का संस्कार देता है। वर्तमान शिक्षा बालक को कितना पर्यावरण के प्रति जागरूक बना रही है। बच्चे इस नष्ट हो रहे पर्यावरण के प्रति कितने जागरूक हैं? प्रस्तुत अध्ययन इसी दृष्टि को ध्यान में रखकर किया गया था परिणामों से ज्ञात होता है कि विद्यार्थी पर्यावरण के प्रति जागरूक हैं वे इस गम्भीर समस्या को समझते हैं, जो कि शुभ संकेत हैं।

अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ

किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के लिये स्वच्छ और स्वस्थ्य व उत्तम पर्यावरण का होना आवश्यक है। व्यक्ति जन्म से जो कुछ गुण लेकर आता है उन गुणों का सर्वोत्तम विकास तभी हो पाता है जबकि उसे उपयुक्त वातावरण की सुविधा प्राप्त हो तो वह व्यक्ति एक संतुलित और श्रेष्ठ व्यक्तित्व का स्वामी बनता है। यदि उचित वातावरण या पर्यावरण के स्थान पर उसे दूषित पर्यावरण की प्राप्ति होती है तो उसकी समस्त क्षमतायें एवं योग्यतायें तथा गुण विकसित होने से पहले ही नष्ट हो जाते हैं। वर्तमान समय में धीरे धीरे

ऐसी ही स्थिति प्रत्येक व्यक्ति के सामने आती जा रही हैं, क्योंकि दिनो–दिन हमारे चारों ओर प्रदूषण के नियंत्रण के प्रति सचेत व जागरूक होना अत्यधिक आवश्यक है। यही कारण है कि आज पर्यावरणीय शिक्षा का वर्तमान समय की शिक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण स्थान बनता जा रहा है।

अध्यापक बच्चों को सही दिशा में तो प्रारम्भ से ही उनमें प्रकृति के साहचर्य के संस्कार पैा होगें और ऐसे बालक आगे जाकर नदियों को प्रदूषित नहीं करेंगे, न वनों की कटाई और न ही जनसंख्या की वृद्धि में सहायक होंगे। पर्यावरण शिक्षा का दर्शन पक्ष हमें शुरू से ही सही दिशा में सोचने व बढ़ने का संस्कार देता है। वर्तमान शिक्षा बालक को कितना पर्यावरण के प्रति जागरूक बना रही है। बच्चे इस नष्ट हो रहे पर्यावरण के प्रति कितने जागरूक हैं? प्रस्तुत अध्ययन इसी दृष्टि को ध्यान में रखकर किया गया था। परिणामों से ज्ञात होता है कि विद्यार्थी पर्यावरण के प्रति जागरूक हैं वे इस गम्भीर समस्या को समझते हैं, जो कि शुभ संकेत हैं।

आगामी अध्ययन हेतु सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन का विषय क्षेत्र विस्तृत होने के कारण और समय की कमी के कारण बहुत से पर्यावरणीय प्रदूषण से सम्बन्धित क्षेत्र इस अध्ययन की सीमा में नहीं आते हैं जिन पर अभी और अधिक अध्ययन की आवश्यकता है जिससे आगे आने वाली पीढ़ी को एक स्वच्छ, शुद्ध प्रदूषण रहित पर्यावरण उपलब्ध कराया जा सकें। अतः निम्नलिखित सुझाव के आधार पर भविष्य में इस क्षेत्र के अन्तर्गत और अधिक अध्ययन किया जा सकता है :–

1. प्रस्तुत अध्ययन में लिए गये छोटे से न्यादर्श के आधार में और अधिक बड़े प्रतिदर्श पर अध्ययन किया जा सकता है।
2. प्रस्तुत अध्ययन में केवल कानपुर शहर को ही सम्मिलित किया गया हैं तथा इसमें अन्य शहरों को भी सम्मिलित किया जा सकता है।
3. आगामी अध्ययनों हेतु हिन्दी व अंग्रेजी दोनों ही माध्यमों के विद्यार्थियों पर किया जा सकता है।
4. अच्छे व सही परिणामों की प्राप्ति के लिये ग्रामीण व शहरी दोनों को अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत लिया जा सकता है।
5. प्रस्तुत अध्ययन में लिये गये पर्यावरण से सम्बन्धित अन्य क्षेत्रों में भी विस्तृत अध्ययन किया जा सकता है।
6. पर्यावरण जागरूकता के मापन के लिए विभिन्न समुदायों, वर्गों एवं संगठनों से जुड़े व्यक्तियो को भी किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *शर्मा, आर0ए, पर्यावरण शिक्षा, ''पर्यावरण का अर्थ'', सूर्या पब्लिकेशन, संस्करण–प्रथम 199, 2000, पृष्ठ संख्या–5।*
2. *सिंह, गोपाल, पर्यावरण शिक्ष ''स्थल मण्डल एवं उसका संरक्षण'', आय बुक डिपो, संस्करण–प्रथम, 1986, पृष्ठ संख्या– 114।*
3. *सेंगर शिवराज सिंह, पर्यावरण शिक्षा, ''पर्यावरण'', साहित्य प्रकाशन, संस्ककरण–प्रथम, 1996, पृष्ठ संख्या– 1।*
4. *पाण्डे, के0पी0 और सरला पाण्डेय, पर्यावरण शिक्षा एवं भारतीय सन्दर्भ, ''पर्यावरण से तात्पर्य'', भारतीय पर्यावरण शिक्षा परिषद, संस्करण–प्रथम, 1995, पृष्ठ संख्या– 18।*
5. *उपाध्याय, राधाबल्लभ, पर्यावरण शिक्षा, ''पर्यावरण शिक्षा'', विनोद पुस्तक मन्दिर, संस्करण, नवीनतम, 1998, पृष्ठ संख्या– 209।*
6. *व्यास हरिश्चन्द्र, पर्यावरण शिक्षा, ''पर्यावरण शिक्षा–अर्थ, महत्व, उद्देश्य एवं दर्शन'' विद्या बिहार, पृष्ठ संख्या– 23।*
7. *वुच, 5 सर्वे ऑफ एजुकेशनल रिसर्च–बैलियूम–1, ''इकोलोजिकल एण्ड इनवायरमेंटल स्टडीज इन एजूकेशन'', राष्ट्रीय अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, पृष्ठ संख्या– 651–657।*
8. *राय, पी0एन0, अनुसंधान परिचय, ''न्यादर्श'', लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन, संस्करण– 1973, 1997, 1998, पृष्ठ संख्या– 289।*